राज्य अध्याय 35

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट)	***(शान्त समय)*** **यशायाह 9,10,11 और 40**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 9,10,11 और 40) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट)	***(रोमियों में प्रमुख पद)*** **(15) रोमियों 10:17**

दो-दो करके ***पुनरावलोकन करें।***

(15) रोमियों 10:17। अतः विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट)	***(यीशु के दृष्टान्त)*** **मूर्ख धनवान और धनवान व्यक्ति व गरीब लाज़र**

लूका 12:13-21 में "मूर्ख धनवान का दृष्टान्त"
और लूका 16:19-31 में "धनवान व्यक्ति व गरीब लाज़र का दृष्टान्त"
परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में बताते हैं

"एक दृष्टान्त" स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों की उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेंगे (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

क. मूर्ख धनवान का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 12:13-21

1. **दृष्टान्त की स्वभाविक कहानी को समझें।**

परिचय। दृष्टान्त एक प्रतिकात्मक रूप में बताया जाता है जिसका अपना एक आत्मिक अर्थ होता है। इसलिए हम सबसे पहले उस वचनों को, कहानी की सभ्यता और उसके ऐतिहासिक तथ्यों और कहानी की पृष्ठभूमि को पढ़ेंगें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

एक धनवान व्यक्ति। एक धनी व्यक्ति ने भरपूर फसल का उत्पादन किया। बाइबल धनी या समृद्ध व्यक्ति होने के लिए किसी की भी निन्दा नहीं करती। अय्यूब, अब्राहम, सुलैमान और अरमितिया का यूसुफ, ये सभी धनी व्यक्ति थे। यह दृष्टान्त हमें यह नहीं बताता कि वह व्यक्ति बेईमानी (जुआ या लॉटरी) से धनी बना। इस दृष्टान्त की धारणा यह है कि परमेश्वर ने उसके हाथों के कार्य को आशिषित किया।

सांसारिक व्यक्ति। इस व्यक्ति का धनी होना, इसकी समस्या नहीं थी, परन्तु उसकी समस्या थी कि वह सांसारिक वस्तुओं पर मन लगाए हुए था। उसे इस बात का एहसास नहीं था कि उसका शरीर नाशवान है और वह हमेशा जीवित नहीं रहने वाला। उसे इस तथ्य का भी ध्यान नहीं था कि उसकी सम्पत्ति उसकी आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकती! उसके पास बहुत सी सांसारिक सम्पत्ति थी, परन्तु उसकी आत्मा के पास कुछ भी नहीं था!

स्वार्थी। यह धनी व्यक्ति केवल स्वयं के बारे में ही सोचता था, उसे अन्य लोगों की कोई फिक्र नहीं थी। उसने जो योजनाएँ बनाई जिसमें केवल "मैं" और "मेरी सम्पत्ति" का ही स्थान था। उसने संसारभर के उन अनेक लोगों के बारे में नहीं सोचा जो भूखे थे और न ही उसने अपने धन में से उन्हें कुछ बाँटना चाहा।

अविश्वासी। इस धनी व्यक्ति ने अपने धन और समृद्धि के लिए परमेश्वर के नाम को धन्यवाद और महिमा नहीं दी। राजा दाऊद अपने भजन में इस प्रकार कहता है, "हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना" (भजन 103:2)! परन्तु इस धनी व्यक्ति ने स्वयं (अपने प्राण) से कहा, "...कि प्राण, तेरे पास बहुत वर्षों के लिये बहुत सम्पत्ति रखी है; चैन कर, खा, पी, सुख से रह" (लूका 12:18-19)! वह अपनी सभी लाभ की वस्तुओं को परमेश्वर के अनुग्रह से मिलनी वाली वस्तुओं के रूप में नहीं मानता था। याकूब 1:17 कहता है, "क्योंकि हर एक अच्छा वरदान और हर एक उत्तम दान ऊपर ही से है, और ज्योतियों के पिता की ओर से मिलता है, जिसमें न तो कोई परिवर्तन हो सकता है, और न अदल-बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है।"

आकस्मिक मृत्यु। और उसी क्षण परमेश्वर ने कहा, "हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझ से ले लिया जाएगा; तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है, वह किसका होगा?" परमेश्वर ने इस व्यक्ति से कैसे बात की, इसका उल्लेख नहीं किया गया है, हो सकता है कि या तो उसके मन (अपनी आत्मा या साफ सुनाई देने वाली आवाज़) में प्रत्यक्ष रूप से या किसी भविष्यद्वक्ता के द्वारा बात की हो। महत्वपूर्ण बात यह है कि परमेश्वर ने उसे "हे मूर्ख" कहा, क्योंकि उसे ऐसा लगता था कि उसे परमेश्वर की कोई आवश्यकता नहीं है।

उसने सोचा कि केवल वह स्वयं ही अपनी आत्मा और अपने भाग्य का मालिक है। परमेश्वर उसके प्राण को उसके शरीर से दूर ले जा रहे थे (यानी वह मरने जा रहा था), उसके सुखी जीवन के कई वर्षों के बाद नहीं, परन्तु उसी रात को! वह एक ऐसा मूर्ख व्यक्ति था जिसे लगता था कि वह अपने भाग्य और अपनी मृत्यु के समय को नियंत्रित कर सकता है। उसने कभी भी यशायाह भविष्यद्वक्ता के इन वचनों पर विचार नहीं किया, "बोलने वाले का वचन सुनाई दिया, "प्रचार कर!" मैंने कहा, "मैं क्या प्रचार करूँ?" सब प्राणी घास हैं, उनकी शोभा मैदान के फूल के समान है। जब यहोवा की साँस उस पर चलती है, तब घास सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता है; निःसन्देह प्रजा घास हैं। घास तो सूख जाती है, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर

का वचन सदैव अटल रहेगा" (यशायाह 40:6-8)।

---

2. <u>वर्तमान संदर्भ का मूल्यांकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें</u>।

परिचय। दृष्टान्त की "कहानी के" संदर्भ में दृष्टान्त की "परिस्थिति" और "व्याख्या या अनुप्रयोग"हो सकते हैं। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त बताये जाने के *माहौल* या उपलक्ष्य के बारे में बता सकती है या यह बता सकती है कि किस माहौल में वह दृष्टान्त बताया गया था। कहानी की परिस्थिति कहानी प्रायः कहानी के *पहले* पायी जाती है और उसकी व्याख्या या उसका अनुप्रयोग दृष्टान्त की कहानी के *बाद* में पाया जाता है।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) **इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका 12:4-7,13-15 में पायी जाती है।**

शारीरिक मृत्यु की चिन्ता करना। यीशु ने भीड़ को मृत्यु के विषय में चेतावनी दी थी कि उन्हें किससे डरना चाहिए। उसने उनसे यह कहा, "परन्तु मैं तुमसे कहता हूँ, कि जो शरीर को मार सकते हैं और उससे ज्यादा और कुछ नहीं कर सकते, उनसे मत डरो। मैं तुम्हें चेतावनी देता हूँ कि तुम्हें किस से डरना चाहिए, मारने के बाद जिसको नरक में डालने का अधिकार है, उसी से डरो; वरन् मैं तुमसे कहता हूँ उसी से डरो" (लूका 12:4-5)! यीशु ने शारीरिक मृत्यु के प्रश्न के विषय में अपने चेलों को प्रोत्साहित किया। उसने उनसे कहा कि ज़्यादा से ज़्यादा उनके शत्रु उनके शरीर को घात कर सकते हैं। परन्तु वे उनकी आत्मा को नहीं मार सकते। इस पृथ्वी पर मसीहियों के विरूद्ध बुराई करने की उनकी शक्ति केवल उनकी शारीरिक देह तक ही सीमित है। इससे अधिक सामर्थ्य उनके पास नहीं! परन्तु यीशु ने भीड़ में उपस्थित लोगों को अनन्त मृत्यु के विषय में चेतावनी दी! अस्थाई मृत्यु को लाने वाली शक्ति की तुलना नरक में डाले दण्ड के रूप में मिलने वाली अनन्त मृत्यु से नहीं की जानी चाहिए।

धन की चिन्ता करना। भीड़ में उपस्थित किसी व्यक्ति ने यीशु से कहा, कि वह पिता से मिलने वाली सम्पत्ति के विवाद के विषय में हस्तक्षेप करें। पुराने नियम की पुस्तक व्यवस्थाविवरण 21:15-17, गिनती 27:8-11 और गिनती 36 में इस्राएल में पिता की सम्पति को बाँटने के विषय के नियमों को लिखा गया है। यह सम्भव होगा कि मौजूदा मामले में बड़ा भाई अपने छोटे भाई को पिता की सम्पत्ति में से एक तिहाई भाग देने को तैयार नहीं था। वैसे भी, ऐसा लग रहा था जैसे कि इस व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ हो, और क्योंकि इस प्रकार के स्वभाविक मामलों का निपटारा यहूदी शिक्षकों द्वारा कभी-कभी किया गया था, यीशु से भी इस मामले में मध्यस्थता करने को कहा गया।

परन्तु <u>यीशु ने इस मामले में पड़ने से इनकार कर दिया, शायद इसलिए कि वह उन अधिकारियों की अनदेखी नहीं करना चाहता था जो इस मामले से निपटने वाले थे या जिनका काम इस प्रकार के मामलों को निपटाना था और इससे भी बढ़कर बात यह थी कि यीशु के लिए खोए हुओं को ढूँढ़ने और उन्हें बचाने के कार्य को करना अधिक महत्वपूर्ण था</u>। यीशु को पता था कि भौतिक मामलों के साथ इस व्यक्ति की जड़ लालच थी। इसलिए उसने सुनने वाली पूरी भीड़ को मूर्ख धनवान व्यक्ति का दृष्टात सुनाया।

(2) **दृष्टान्त की कहानी लूका 12:16-20 में लिखी हुई है।**

(3) **इस दृष्टान्त की व्याख्या और उसका अनुप्रयोग लूका 12:20-21 में दिया गया है, आंशिक रूप से कहानी में और आंशिक रूप से यीशु की अन्तिम चेतावनी में।**

यीशु ने कहा कि केवल मूर्ख ही ऐसा सोच सकता है कि वह अपने भाग्य और अपनी मृत्यु के समय को

नियंत्रित कर सकता है। जीवन एक ऐसी वस्तु है, जिसे व्यक्ति न तो प्राप्त कर सकता है और न ही नियंत्रित! यीशु ने चेतावनी दी कि जो केवल शारीरिक धन की चिन्ता करता है और आत्मिक धन की उपेक्षा करता है वह मूर्ख है और दृष्टान्त में मूर्ख की तरह ही मर जाएगा। धनी मूर्ख की गलती यह थी कि वह सोचता था कि वह अपनी सांसारिक संपत्ति के आधार पर अपने जीवन का निर्माण कर सकता है!

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

परिचय। यीशु ने मन में ऐसा नहीं ठाना था कि उनके द्वारा बताये गये दृष्टान्त की कहानी के हर भाग का कोई न कोई आत्मिक अभिप्राय ज़रूर हो। कहानी के अन्दर पाया जाने वाला प्रासंगिक विवरण वह विवरण है जो दृष्टान्त के केन्द्र-बिन्दु या मुख्य विषय या उसकी शिक्षा की ओर संकेत करता है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के हर एक भाग के आत्मिक अभिप्राय की खोज में नहीं लगे रहना चाहिए।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

यीशु **"धनवान व्यक्ति"** को केवल एक विशेष अर्थ देता है। वह हर उस व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जो अपने लिए धन और शारीरिक संपत्ति रखता है, लेकिन वह परमेश्वर की दृष्टि में धनवान नहीं है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहिचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदेश (प्रमुख विषय) या तो कहानी की व्याख्या या उसके अनुप्रयोग में छिपा होता है। जिस तरीके से स्वयं यीशु मसीह ने दृष्टान्त की व्याख्या की या उसका अनुप्रयोग किया, उसी से हमें पता चलता है कि हम उस दृष्टान्त का क्या अर्थ निकाल सकते हैं।

दृष्टान्त की सामान्यतः केवल एक शिक्षा होती है, अर्थात् एक केन्द्र-बिन्दु होता है। इसलिए, हमें कहानी के हर हिस्से से एक मतलब ढूँढ़ने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, वरन् हमेशा उसकी मुख्य शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?

ध्यान दें।

लूका 12:13-21में धनवान मूर्ख का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में सांसारिक संपत्ति" के बारे में सिखाता है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "लोगों को अपने लिए जीवन व्यतीत नहीं करना चाहिए, लेकिन अपने जीवन की हर परिस्थिति में परमेश्वर के साथ रहना चाहिए। उन्हें विशेष रूप से सांसारिक संपत्ति और अनन्त जीवन के मामले में परमेश्वर पर अपनी निर्भरता के बारे में अच्छी तरह से सचेत रहना चाहिए।"

दैनिक जीवन के लिए परमेश्वर पर निर्भरता, परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग अपनी सांसारिक संपत्ति के आधार पर नहीं बल्कि परमेश्वर पर पूरी तरह निर्भरता के आधार पर अपने जीवन का निर्माण करते हैं।

---

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान अर्थ वाले होते हैं और उनकी आपस में तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सारे दृष्टान्तों में दी गयी शिक्षा सामान्तर या पूरक शिक्षा होती है जिसे बाइबल के दूसरे गद्यांशों में सिखाया जाता है। ऐसे पूरक वचन को तलाश करने की कोशिश करें जिससे दृष्टान्त को समझने में आसानी होती हो। हमेशा दृष्टान्त के अर्थ की तुलना बाइबल की स्पष्ट शिक्षा के साथ करें।

(1) **बाइबल सांसारिक सम्पदा को कैसे देखती है?**

- बाइबल में कहीं भी परमेश्वर सांसारिक धन की निन्दा नहीं करते।
- अब्राहम पशुओं और कीमती धातुओं के मामले में बहुत धनी था (उत्पत्ति 13:2)।
- बहुत परमेश्वर ने राजा सुलेमान को न केवल बुद्धि दी, बल्कि धन और सम्मान भी दिया (1 राजाओं 3:10-13)।
- अय्यूब के पास इतनी सम्पत्ति थी कि उसे पूर्व के लोगों में सबसे बड़े व्यक्ति के रूप में जाना जाता था। (अय्यूब 1:3; 42:12)।
- अरिमतियाह का युसूफ जो यीशु का चेला था और वह भी एक धनी व्यक्ति था (मत्ती 27:57)।
- परमेश्वर उन लोगों को जो इस वर्तमान संसार में धनी हैं, यह आज्ञा देते हैं कि वे अभिमानी न हों और अपनी आशा को अनिश्चित धन पर न रखें, परन्तु अपनी आशा को केवल उसी परमेश्वर पर रखें, जो हमारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है। परमेश्वर उन लोगों को आज्ञा देते हैं कि वे भलाई करने व भले कामों को करने में धनी हों, तथा उदार और सहायता करने के लिए तत्पर रहें। ऐसा करने से वे नये स्वर्ग और नई पृथ्वी के आने वाले युग में स्वयं के लिए धन इकट्ठा कर पाएँगे (1 तीमुथियुस 6:17-19; तुलना करें मत्ती 6:19-21)!

(2) **धन होने के क्या-क्या ख़तरे हैं?**

- धन के कारण व्यक्ति अहंकारी बन सकता है और प्रभु को भूल सकता है (व्यवस्थाविवरण 8:11-14)।
- धन होने के कारण व्यक्ति अपना भरोसा वस्तुओं पर रख सकता है और परमेश्वर के प्रति अविश्वासी बन सकता है। (अय्यूब 31:24-28)।
- धन के कारण व्यक्ति अपने पास की वस्तुएँ जो कुछ उसकी हैं उससे असन्तुष्ट हो सकता है, और अपना पूरा जीवन के सांसारिक भौतिक सम्पत्ति की वृद्धि के लिए व्यर्थ कर सकता है। (सभोपदेशक 5:10-11)।
- धन किसी भी व्यक्ति को परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने से रोक सकता है (मरकुस 10:21-26)।
- धन के कारण व्यक्ति, अभिमानी, धमकानेवाला, दमनकारी या स्वार्थी, कंजूस और अन्यायी हो सकता है (भजन संहिता 73:2-12; याकूब 5:1-6)।

(3) **बाइबल के प्रत्येक गद्यांश, दृष्टान्त की तुलना में क्या सिखाते हैं?**

- भजन 37:4-6। जो कोई यहोवा पर भरोसा रखता है और उसको अपने सुख का मूल जानता है, तब यहोवा उसको मनोरथों को पूरा करेगा और उसकी धार्मिकता को अन्य लोगों पर प्रगट करेगा।
- नीतिवचन 16:2-3। जो कोई अपने कार्यों को यहोवा पर डाल देता है, उसकी कल्पनाएँ सिद्ध होंगी।
- मत्ती 6:33। जो कोई पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करता है, उन्हें परमेश्वर जीवन की अन्य सभी आवश्यक वस्तुएँ देगा।
- 1कुरिन्थियों 10:31। जो भी करें, सबकुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करें।
- कुलुस्सियों 3:24-25। जो भी आप करें, उसे तन-मन और अपने सम्पूर्ण हृदय से परमेश्वर के लिए करें, यह समझकर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करें। तब आपको सांसारिक विरासत नहीं, बल्कि प्रभु से विरासत मिलेगी। इस विरासत में अन्य वस्तुओं के साथ-साथ, नये स्वर्ग नई पृथ्वी भी शामिल हैं!

(4) **मत्ती 6:19-24 पदों की तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाते हैं?**

जो कोई भी परमेश्वर की सेवा करता है, वह अपने लिए स्वर्ग में ख़जाने को इकट्ठा करता है। परमेश्वर के राज्य के लोगों (मसीहियों) को निरन्तर अपने लिए स्वर्ग में धन इकट्ठा करने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

पृथ्वी के धन को कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं। "कीड़ा और काई" उन साधनों और प्रक्रियाओं को दर्शाते हैं जो

सांसारिक ख़जाने के मूल्य को कम करती हैं और अन्ततः अपने उद्देश्य की सेवा करने के लिए पूरी रीति से बन्द हो जाती है। और इस प्रकार उनकी रोटी में फफूँदी लग जाती है (यहोशू 9:5), उनके सब कपड़े पुराने होते जाते हैं (भजन 102:26), उनके खेतों में खरपतवार लग जाती है (नीतिवचन 24:30), उनकी दीवारें और बाढ़े टूट जाती हैं (नीतिवचन 24:31), छत की कड़ियाँ दब जाती है जिससे उनके घरों में पानी का रिसाव होना आरम्भ हो जाता है (सभोपदेशक 10:18) और उनके सोने-चाँदी की वस्तुएँ धूमिल और नाश हो जाती हैं (1पतरस 1:7,18)। इसी प्रकार दीमक, आँधी-तूफान, भूकम्प, बाढ़ पौधों की बीमारियाँ, मिट्टी का कटाव, मानवीय गलतियाँ और दुर्घटनाएँ आदि सांसारिक ख़जाने को तबाह करते हैं। चोर घरों की मिट्टी की दीवारों को तोड़कर चोरी करते हैं। मंदी, दमनकारियों, करदाताओं द्वारा जबरदस्ती राशि को जब्त किया जाना, बैंक के डूबने, शेयर बाजार में मंदी, दुर्घटनाएँ, और लम्बे समय तक बनी रहने वाली बीमारियों का प्रभाव भी इसी प्रकार की मुसीबतों के जैसा हो सकता है। यहाँ तक कि मनुष्य की शारीरिक देह, जिसमें बलशाली लोगों की देह भी शामिल हैं (भजन 32:3; 39:4-7; 90:10; 103:14-16)। जब किसी मनुष्य की मृत्यु होती है, उसकी सारी सांसारिक सम्पत्ति जिस पर उसने अपनी आशाओं की योजना बनाई थी, उसके साथ समाप्त हो जाती है।

स्वर्ग के ख़जाने को नष्ट नहीं किया जा सकता और न ही निकाला जा सकता है। इनमें स्वर्ग की निम्नलिखित बातें शामिल हैं (तुलना करें इफिसियों 1:3) :

- एक करुणा जो सर्वदा बनी रहती है (भजन 138:8);
- एक ऐसा जीवन जो कभी समाप्त नहीं होगा (यूहन्ना 3:16);
- वह जल का सोता जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा (यूहन्ना 4:14);
- एक ऐसा वरदान जो कभी खोएगा नहीं (यूहन्ना 6:37-39);
- एक मज़बूत और सुरक्षित हाथ, जिसमें से कोई भी मसीह की भेड़ को कभी नहीं छीन सकता है (यूहन्ना 10:28);
- परमेश्वर के ईश्वरीय कार्यों की एक श्रृंखला जो कभी नहीं टूटेगी (रोमियों 8:28-30);
- ऐसा प्रेम जिससे परमेश्वर के चुने हुए लोग कभी अलग नहीं होंगे (रोमियों 8:37-39);
- एक बुलाहट जिसे कभी भी वापस नहीं लिया जाएगा (रोमियों 11:29);
- एक ऐसी नींव जो कभी नष्ट नहीं होगी (2तीमुथियुस 2:19);
- ऐसा राज्य जिसे हिलाया नहीं जा सकता (इब्रानियों 12:28; दानिय्येल 2:44);
- और एक विरासत जो कभी नहीं मिटेगी (1पतरस 1:4-5)।

"शरीर का दीया आँख है"। जिस तरह शारीरिक आँख किसी व्यक्ति को उसके सांसारिक वातावरण के सम्पर्क में लाती है, उसी तरह उसकी आत्मिक आँख या विवेक उसे स्वर्गीय पिता के सम्पर्क में रखता है और आत्मिक और नैतिक मामलों में उसका मार्गदर्शन करता है। हालाँकि, सांसारिक ख़जाने के लिए मज़बूत लालसा एक व्यक्ति को आत्मिक और नैतिक मुद्दों के प्रति अँधा बना सकती है। परमेश्वर की महिमा को बढ़ावा देने के लिए, अर्थात्, उसका लक्ष्य क्या होना चाहिए था, यह व्यक्ति इन सब बातों को भूल जाता है!

---

6. दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा का सारांश बताएँ।

चर्चा करें। दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा या संदेश क्या है? यीशु ने इस दृष्टान्त के द्वारा हमें क्या *समझाने* या *विश्वास* दिलाने की कोशिश की और वह हमें क्या *बनने* या क्या *करने* की शिक्षा देते हैं?

ध्यान दें।

(1) **परमेश्वर से स्वतंत्रता।**

लोग आज अपने बुढ़ापे के लिए बचत करते हैं और पेंशन योजनाओं में निवेश करते हैं। वे अपने और अपने पास पाए जाये जाने वाली लगभग प्रत्येक वस्तु का जीवन बीमा करवाते हैं। लेकिन मनुष्य के अनुसार जीवन का आश्वासन कभी नहीं मिल सकता है! बीमारी और मृत्यु, मुद्रास्फीति या अर्थव्यवस्था के पतन, या युद्धों और अकाल के कारण सुरक्षित आय, या स्वास्थ्य आदि बातों का आश्वासन नहीं मिल सकता। पृथ्वी पर जीवन एक क्षण में समाप्त हो सकता है! सांसारिक सम्पत्ति का आनन्द बीमारी या दुर्घटना से ख़राब हो सकता है। यह सोचना बिल्कुल मूर्खतापूर्ण है कि किसी ने पृथ्वी पर अपने भविष्य के लिए सब कुछ किया है, जबकि उसने मृत्यु के बाद अपने अनन्त भविष्य की तैयारी के लिए पूरी तरह से उपेक्षा की है! हर कोई जो अपने जीवन या कार्य से परमेश्वर को बाहर या अलग करता है, वह मूर्ख है (भजन संहिता 14:1-3)।

(2) **लालच।**

लालच परमेश्वर से दूर ले जाता है। नैतिकतापूर्ण पाप करने वाले इस धनवान व्यक्ति के बारे में कुछ भी ऐसा लिखा नहीं है, जैसे बेईमानी, धोखा, चोरी, भ्रष्टाचार, आदि। हम यह मान सकते हैं कि वह अपने धन को हासिल करने में ईमानदार था। लेकिन उसके गिरने का कारण यह था कि उसका *गलत आत्मिक व्यवहार* था : उसने *परमेश्वर के बिना अपने जीवन की योजना* बनाई! उसने अपनी आशीष के लिए परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता नहीं दिखाई बल्कि केवल अपनी मेहनत की प्रशंसा की (1 कुरिन्थियों 4:7)। वह सन्तुष्ट नहीं था, क्योंकि वह हमेशा और अधिक धन चाहता था (फिलिप्पियों 4:11-12)। वह अपने धन को किसी के साथ साझा नहीं करता था लेकिन अपने आनन्द के लिए उसका इस्तेमाल करता था (1 कुरिन्थियों 15:32)। उसने परमेश्वर पर भरोसा नहीं रखा और अपने जीवन को परमेश्वर के सामने समर्पित नहीं किया क्योंकि वह अपनी सम्पत्ति के बारे में चिन्तित था (मत्ती 6:31-34)। और उसने जीवन की क्षणभंगुरता को कभी विचार नहीं दिया। अगर जीवन ही चला गया है, तो चिन्ता करने के लिए क्या बचा है (मत्ती 16:26)? वह अस्थायी और समाप्त होने वाले धन के पीछे भागा और अनन्त और अविनाशी की तलाश करने के लिए उपेक्षित हो गया (2 कुरिन्थियों 5:7)। संक्षेप में, उसने उदासीनता का जीवन व्यतीत किया! उसकी मानवीय इच्छाएँ, बहुत समझ से, ज़रूरी नहीं कि आपत्तिजनक हों, लेकिन वे उसकी मूल्य-प्रणाली से भी ऊपर थे। धनवान मूर्ख के लिए, सत्य, न्याय और दया की तुलना में लाभ कमाना एक उच्च मूल्य बन गया।

(3) **धन का दास।**

धन के पास अपने मालिक होने की तुलना में अधिक मज़बूत होने का एक तरीका है, यह अन्ततः उसके पास आता है, ताकि उसको अपना दास बना सके। धन की वजह से अन्त में वह व्यक्ति अपनी नैतिक और आत्मिक स्वतंत्रता खो देता है और वह सांसारिक सम्पत्ति का दास बन जाता है।

ख. धनवान व्यक्ति ओर गरीब लाजर का दृष्टान्त

पढ़ें लूका 16:19-31

1. <u>दृष्टान्त में बतायी गयी मूल कहानी को समझें</u>।

चर्चा करें। कहानी में जीवन से जुड़े तथ्य कौन से हैं?

ध्यान दें।

मृत्यु से पहले धनवान व्यक्ति और भिखारी का जीवन वर्तमान में पाए जाने वाले जीवन के लिए वास्तविकता है। मृत्यु के बाद का उनका जीवन मसीह के बाद के जीवन का आलंकारिक वर्णन है।

मृत्यु से *पहले* धनवान व्यक्ति और भिखारी। यह व्यक्ति बहुत धनवान था क्योंकि वह बैंगनी और बढ़िया मलमल के कपड़े पहन सकता था। बैंगनी रंग को सीपदार मछली (शेलफिश) से प्राप्त किया गया था और यह

एक बहुत महंगी प्रक्रिया थी। अक्सर केवल शाही लोग ही ऐसे बैंगनी वस्त्र पहनते थे। उसने इतने महंगे कपड़े पहने और हर दिन ऐशो-आराम की ऐसी ज़िन्दगी व्यतीत की क्योंकि वह चाहता था कि हर कोई यह जान सके कि वह धनवान है! यह व्यक्ति एक दिखावा था। लेकिन यह धनवान व्यक्ति केवल दिखावा नहीं था; वह निर्दयी, असंवेदनशील और स्वार्थी भी था।

इस धनवान व्यक्ति के द्वार पर एक भिखारी था। उसे हर दिन वहाँ रखा गया था क्योंकि वह स्पष्ट रूप से नहीं चल सकता था। उसका नाम "लाजर" इब्रानी नाम "एलेजार" से लिया गया था और इसका अर्थ है "परमेश्वर ने सहायता की है।" यीशु ने शायद उसे यह नाम इस दृष्टान्त में दिया था, क्योंकि वह संकेत करना चाहता था कि इस भिखारी ने, अपने सभी संकटों में, केवल परमेश्वर पर अपना भरोसा रखा था। यह व्यक्ति अपनी ज़रूरतों के प्रति पूरी तरह से असमर्थ था। वह न केवल भूखा था, वह घावों से भी ढँका हुआ था, जिसे गली के कुत्तों आकर चाटा करते थे। यह बहुत पीड़ादायक था और इससे जलन हो सकती थी।

धनवान व्यक्ति ने हर दिन भिखारी को देखा होगा क्योंकि वह उसके द्वार पर पड़ा था! उसे उस भिखारी पर दया दिखाने और कुछ सहायता करने का एक शानदार अवसर मिला। फिर भी, उसने भिखारी को खाने के लिए बचा हुआ भोजन भी नहीं दिया। वह केवल अपने लिए ही जीता था!

मृत्यु के *बाद* भिखारी और धनवान व्यक्ति। भिखारी मर गया। उसके दफनाने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। यदि उसे दफनाया गया था, तो यह इतना अस्पष्ट और निराशाजनक रहा होगा कि यह सब चुपचाप ही कर दिया गया होगा। हालाँकि, उसकी आत्मा के साथ जो हुआ वह सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था! स्वर्गदूतों ने तुरन्त उसकी आत्मा को अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया (इब्रानियों 1:14)। "अब्राहम की गोद" एक इब्रानी अभिव्यक्ति है, जो उनके व्यवहार से लेकर रात्रिभोज और त्योहारों में सोफे पर पुनः बैठाने के लिए है, और किसी की गोद (दाएँ हाथ की ओर) पर बैठना विशेष एहसान का संकेत देता है (लूका 14:7; यूहन्ना 1:18)। भिखारी की आत्मा को स्वर्ग में लाया गया था, जहाँ वह महान सम्मान के स्थान पर स्वर्ग की दावत की मेज़ पर आया!

धनवान व्यक्ति भी मर गया और उसे गाढ़ा गया। संभवतः उसे पृथ्वी पर एक शानदार अन्तिम संस्कार दिया गया था। उसके शव की बहुत देखभाल की गई, लेकिन उसकी आत्मा के बारे में कुछ नहीं कहा गया है! पृथ्वी पर उसके परिवार और दोस्तों को नहीं पता था कि मृत्यु के बाद उसके साथ क्या हुआ! धनवान व्यक्ति ने "अधोलोक" में अपनी आँखें खोलीं, यूनानी शब्द "हेड्स" इस सन्दर्भ के आधार पर तीन सम्भावित स्थानों को दर्शाता है :

- बिना देह की मृत्यु के बाद की अवस्था
- मृत व्यक्ति के शरीर के स्थान के रूप में कब्र
- अनन्त दण्ड के स्थान के रूप में नरक

इस सन्दर्भ में, धनवान व्यक्ति ने अपनी आँखें अधोलोक में खोलीं, क्योंकि वह आग में पीड़ा से तड़प रहा था।

मनुष्य की अपरिवर्तनीय नियति। हालाँकि धनवान व्यक्ति ने अब्राहम और लाजर को दूर से देखा, और यद्यपि धनवान व्यक्ति और अब्राहम के बीच बातचीत सम्मानजनक थी (उन्होंने एक दूसरे को "पिता" और "पुत्र" के रूप में सम्बोधित किया), इससे उसकी पीड़ा को कोई राहत नहीं मिली। धनी व्यक्ति ने दिखाया कि उसका चरित्र नहीं बदला था – उसने फिर भी लाजर को एक नौकर के रूप में देखा, जिसे उस पर एक एहसान करना चाहिए, भले ही उसने स्वयं लाजर पर कभी कोई एहसान नहीं दिखाया था! उसने अब्राहम से अपनी पीड़ा दूर करने के लिए लाजर को उसके पास भेजने की विनती की!

अब्राहम ने अनुचित और असम्भव अनुरोध को अस्वीकार कर दिया! सबसे पहली बात, धनवान व्यक्ति की पीड़ा से राहत देना अनुचित होगा, क्योंकि यह न्याय की आवश्यकताओं के विपरीत था, क्योंकि धनवान व्यक्ति अब वह प्राप्त कर रहा था जिसके लिए वह हकदार था! जब वह पृथ्वी पर रहता था, तो उसकी गलत प्राथमिकताएँ थीं। उसने लाजर की सहायता नहीं की थी, यानी उसने अपने साथी और परमेश्वर की महिमा के लिए उपयोगी जीवन व्यतीत नहीं किया था। दूसरी बात, यह असम्भव होगा। एक तरफ से दूसरी तरफ जाना कभी भी सम्भव नहीं था। इस्राएल में, घाटियों के बीच गहरी खाई है, और यीशु ने मृत्यु के बाद किसी व्यक्ति की अपरिवर्तनीयता की दशा को दर्शाने और अविस्मरणीय प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व के रूप में इसका इस्तेमाल किया था! यह खाई दूसरी तरफ जाने को असम्भव बनाती है।

मनुष्य के लिए चेतावनी का एकमात्र संदेश। तब धनवान व्यक्ति ने अब्राहम से विनती की कि वह मृतकों में से लाजर को उसके भाइयों के पास पृथ्वी पर भेजे ताकि वह उन्हें चेतावनी दे क्योंकि वह डरता था कि उसके भाई बाद में उसके द्वारा दिए गए बुरे उदाहरण के लिए उसे ही दोषी ठहराएँगे। धनवान व्यक्ति अभी भी स्वार्थी था – वह सामान्य रूप से लोगों के बारे में नहीं सोचता था, लेकिन केवल अपने ही परिवार के बारे में सोचता था!

अब्राहम ने उत्तर दिया कि उनके पास मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, अर्थात् पुराना नियम। पुराने नियम में जीवन, जो उस धनी व्यक्ति के विपरीत है, उसकी प्रशंसा की जाती है। बाइबल सभी लोगों को परमेश्वर पर भरोसा रखने, अन्य लोगों से प्रेम करने और विशेष रूप से संसार में वंचित और तिरस्कृत लोगों की देखभाल करने के लिए प्रेरित करती है।

धनवान व्यक्ति ने कहा कि यदि कोई मरे हुओं में से उनके पास जायेगा तो वे बदल जाएँगे। वह गलत था क्योंकि जब यीशु ने अन्य लोगों को मृतकों में से उठाया, तो एक और लाजर की तरह, जो मरियम और मार्था का भाई था, बहुत से लोग परिवर्तित नहीं हुए थे। इसके बजाय, उन्होंने उस लाजर को मारने की साजिश रची (यूहन्ना 12:10) और यीशु को मारने के लिए वे पहले से कहीं अधिक दृढ़ थे (यूहन्ना 11:47-50)। इसके अलावा यीशु मसीह स्वयं मृतकों में से जी उठा, लेकिन फिर भी कई लोगों ने अभी भी उस पर विश्वास करने से इनकार कर दिया (प्रेरितों 4:2; 17,18)। अब्राहम ने धनवान व्यक्ति से कहा, कि अगर लोग बाइबल में दी गयी चेतावनी को नहीं सुनना चाहते, तो यदि मरे हुओं में से कोई भी जी उठे तौभी उसकी नहीं मानेंगे!

---

2. वर्तमान संदर्भ का मूल्याँकन करें और दृष्टान्त के तत्वों को पहिचानें।

खोजें व चर्चा करें। दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और उसकी व्याख्या या अनुप्रयोग क्या है?
ध्यान दें।

(1) **इस दृष्टान्त की परिस्थिति लूका अध्याय 15 और 16 में पायी जाती है।**

लूका अध्याय 15 में, यीशु ने खोई हुई भेड़, खोए हुए सिक्के और खोए हुए पुत्र के बारे में तीन दृष्टान्तों को बताया, जिसमें उन्होंने दुनिया में खोए हुए लोगों के प्रति परमेश्वर के दृष्टिकोण को सिखाया। यह कर संग्रहकर्ताओं और पापियों के प्रति फरीसियों और व्यवस्था के शिक्षकों के बुरे व्यवहार के जवाब में था। इन तीनों दृष्टान्तों में, यीशु ने लोगों के प्रति पापी व्यवहार को उजागर किया!

लूका अध्याय 16 में, यीशु ने दो दृष्टान्त बताए। चतुर प्रबन्धक के दृष्टान्त में, यीशु ने भौतिक सम्पत्ति (धन) के प्रति पापपूर्ण व्यवहार को उजागर किया। धनवान और गरीब लाजर के दृष्टान्त में, उसने लोगों और पैसे दोनों के दुष्ट काम को उजागर किया! धनी व्यक्ति दिखावा पूरी तरह से सांसारिक धन का उपयोग करके अपने लिए दोस्त बनाने के लिए उपेक्षित है (लूका 16:9)। वह एक ऐसा व्यक्ति था, जो लोगों के बीच तो बहुत

मूल्यवान था, लेकिन परमेश्वर की दृष्टि में घृणास्पद था (लूका 16:15)। वह अच्छे सामरी के ठीक विपरीत था (लूका 10:30-37)।

(2) **दृष्टान्त की कहानी लूका अध्याय 16:19-31 में लिखी हुई है।**

(3) **दृष्टान्त की व्याख्या या अनुप्रयोग नहीं दिया गया है।**

इसे कहानी या परिस्थिति से निकाला जा सकता है।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहिचानें।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन सा वर्णन वास्तव में ज़रूरी या प्रासंगिक हैं?

ध्यान दें।

(1) **रूपक। एक दृष्टान्त को एक रूपक के रूप में समझाते हुए।**

इस दृष्टान्त की गलत व्याख्या का एक उदाहरण ग्रेगरी द ग्रेट (A.D. 540-604) की व्याख्या है। उन्होंने दृष्टान्त को एक रूपक माना। क्योंकि उसकी व्याख्या को सन्दर्भ के द्वारा बताया नहीं जा सकता, इसे अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

उन्होंने दृष्टान्त की व्याख्या इस प्रकार की : "धनी व्यक्ति यहूदियों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्होंने बाहरी चीज़ों का निर्माण किया और अपने स्वयं के व्यर्थ उद्देश्यों के लिए व्यवस्था का दुरुपयोग किया। घावों से भरे हुआ लाजर अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें अपने पापों को स्वीकार करने में शर्म आती थी। घमण्डी यहूदियों ने व्यवस्था के ज्ञान के लिए अन्यजातियों को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। और कुत्ते उन उपदेशकों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परमेश्वर के वचन का प्रचार करके और पापियों के पश्चातापों को सुनकर आत्मा के घावों को ठीक करते हैं।"

जबकि ग्रेगरी की अलंकारिक व्याख्या को स्वीकार नहीं किया जा सकता है, उनकी नैतिक व्याख्या के अलावा इस दृष्टान्त में बहुत कुछ है। ग्रेगरी ने सम्पत्ति के बाहरी प्रदर्शन के विरुद्ध चेतावनी दी और निर्धनता के गुण को बढ़ा दिया। उसने अपने श्रोताओं को दया के कार्य करने के किसी भी अवसर को न खोने के लिए कहा। उन्होंने कहा, "पृथ्वी की सभी वस्तुओं को तुच्छ जानो; सभी क्षणिक सम्मानों से घृणा करो और उस महिमा की तलाश करें जो समाप्त नहीं होती है। आप जितने भी निर्धन लोगों से मिलते हैं, उनका सम्मान करें, और जब आप उन्हें संसार द्वारा नज़रअंदाज होते हुए देखें, तो उनसे परमेश्वर के मित्र के समान व्यवहार करें। अपने धन को उनके साथ साझा करें ...आप देने में धीमे क्यों हैं, जब आप धरती पर निर्धन व्यक्ति को सब कुछ देते हैं, तो आप उसे देते हैं जो स्वर्ग में है?"

(2) **अप्रासंगिक विवरण।**

यीशु निम्नलिखित विवरणों को कोई विशेष अर्थ नहीं देते हैं और इस प्रकार वे दृष्टान्त की समझ के लिए आवश्यक या प्रासंगिक नहीं हैं। मृत्यु के बाद लोगों की स्थिति और उनके बीच का संचार शाब्दिक दृष्टि से प्रस्तुत किया जाता है ताकि एक छाप पैदा की जा सके। लेकिन इन सभी विवरणों की शाब्दिक व्याख्या नहीं की जा सकती है। उदाहरण के लिए : "आँखों को उठाकर देखना", "उंगली को भिगोना" और "एक जीभ का स्पर्श" शाब्दिक नहीं हैं और केवल दृष्टान्त की कहानी को आगे बढ़ाते हैं। कोई भी यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकता है कि "नरक और स्वर्ग में व्यक्ति एक दूसरे से बात करने में सक्षम हैं", क्योंकि इस विषय पर बाइबल में आगे ऐसी कोई भी की शिक्षा नहीं दी गयी है। दृष्टान्त की कहानी में ऐसे सभी विवरण केवल कहानी को बढ़ाने के लिए काम करते हैं और विशिष्ट सत्य नहीं सिखाते हैं।

(3) **प्रासंगिक विवरण।**

फिर भी, यह दृष्टान्त मृत्यु के बाद के जीवन से सम्बन्धित कुछ सच्चाइयों से अवगत कराता है, क्योंकि ये सत्य बाइबल के अन्य अंशों में भी सिखाए गए हैं। यह तथ्य कि जो लोग मर चुके हैं वे सो नहीं रहे हैं, लेकिन पूरी तरह से सचेत हैं, प्रासंगिक हैं।

कि कुछ लोग निश्चित रूप से बचाए गए हैं और स्वर्ग में परमेश्वर के साथ हैं, जबकि अन्य नरक में पीड़ित हैं, एक प्रासंगिक तथ्य है। इसके अलावा प्रासंगिक तथ्य यह है कि परमेश्वर पृथ्वी पर लोगों को मृत लोगों की आत्माओं के साथ संवाद करने (व्यवस्थाविवरण 18:9-13) और साथ ही मृत लोगों की किसी भी भावना को पृथ्वी पर लोगों के साथ संवाद करने की अनुमति नहीं देते हैं (अय्यूब 14:21; सभोपदेशक 9:5-6; यशायाह 63:16)! परमेश्वर की इच्छा है कि सभी लोग बाइबल में प्रगट किए गए उनके वचनों को सुनें न कि उन माध्यमों और आत्मावादियों को जो फुसफुसाते और बडबडाते हैं (यशायाह 8:19-20)!

भोग विलास में रहने वाले धनी व्यक्ति के समान। यह एक प्रासंगिक विवरण है। अपने आप में धनी होना पापपूर्ण नहीं है, लेकिन स्वार्थी होना और दूसरों के लाभ के लिए धन का उपयोग न करना पापपूर्ण है। धनी व्यक्ति की निंदा इसलिए नहीं की गई है क्योंकि उसने कुछ बुरा किया, बल्कि इसलिए कि उसने अपने पड़ोसी के साथ कुछ भी भला कार्य नहीं किया!

लाजर, अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया। यह एक प्रासंगिक विवरण है। अब्राहम "सभी विश्वासियों के पिता" का प्रतिनिधित्व करता है (रोमियों 4:11)! यह तथ्य कि भिखारी को अब्राहम की गोद में पहुँचाया गया था, स्वर्ग में उसके स्वागत के रूप में दर्शाता है। स्वर्ग में, बचाए हुए लोगों की आत्माएँ परमेश्वर की उपस्थिति में एक साथ हैं (इब्रानियों 12:22-23)। यह तथ्य कि यीशु ने भिखारी को "लाजर" नाम दिया, जिसका अर्थ है "परमेश्वर ने सहायता की", प्रासंगिक है। जो यह दर्शाता है कि भिखारी, अपने सांसारिक कष्टों के बावजूद, परमेश्वर पर भरोसा रखता था।

नरक में होना जहाँ धनवान व्यक्ति तड़प रहा। यह एक प्रासंगिक विवरण है। बाइबल में अन्य गद्यांशों के शिक्षण के साथ, नरक वास्तव में मौजूद है और अविश्वासियों और दुष्टों के अनन्त दण्ड के स्थान को दर्शाता है।

एक बहुत बड़ी खाई जिसे कोई भी पार नहीं कर सकता था। यह एक प्रासंगिक विवरण है। बाइबल में अन्य गद्यांशों के शिक्षण के साथ, प्रत्येक व्यक्ति का अनन्त भविष्य, जो या तो स्वर्ग या नरक है, इस बात पर निर्धारित करता है कि वह व्यक्ति किस पर भरोसा रखता है और पृथ्वी पर रहते हुए वह कैसे अपने जीवन को व्यतीत करता है। *यह नियति बिलकुल अपरिवर्तनीय है! मृत्यु के बाद, लोगों के पास यीशु मसीह को चुनने का कोई दूसरा अवसर नहीं है!*

---

4. <u>दृष्टान्त के मुख्य सन्देश को पहिचानना</u>।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 16:19-31 में "त्रधनवान व्यक्ति और गरीब लाज़र का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति" के बारे में बताते हैं।

इस दृष्टान्त का मुख्य सन्देश निम्नलिखित है। "वर्तमान संसार में मृत्यु से पहले किसी व्यक्ति की जीवन-शैली के परिणाम मृत्यु के बाद अपरिवर्तनीय हैं!" प्रत्येक व्यक्ति की अनन्त नियति (या तो स्वर्ग या नरक) इस

बात से निर्धारित होती है कि वह किस पर विश्वास करता था और अपनी मृत्यु से पहले संसार में उसने किसकी सेवा की थी! परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को इस बात के लिए ज़िम्मेदार मानते हैं कि वह संसार के विशेष रूप से वंचित लोगों से कैसे सम्बन्धित है और वह अपनी सांसारिक सम्पत्ति का उपयोग कैसे करता है।"

वंचितों के साथ सम्पत्ति को साझा करना परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है। परमेश्वर के राज्य के सच्चे लोग अपनी बुलाहट के योग्य जीवन–शैली जीते हैं (इफिसियों 4:1)। सांसारिक सम्पत्ति के सम्बन्ध में, परमेश्वर ने उन्हें साझा करने और देने के लिए, दयालु बनने और देखभाल करने के लिए बुलाया।

5. दृष्टान्त की तुलना बाइबल में दिये सामान्तर या पूरक गद्यांशों से करें।

(1) **बाइबल के प्रत्येक अंश में जो सिखाया जाता है, उसकी तुलना में दृष्टान्त क्या सिखाता है?**
पढ़ें भजन संहिता 119:105; 1 कुरिन्थियों 10:6,11; इफिसियों 4:32 से 5:2

पूरी बाइबल, पुराने नियम और नए नियम दोनों से पता चलता है कि परमेश्वर लोगों से किस प्रकार जीवन को व्यतीत करने की अपेक्षा करते हैं। यह उन शिक्षाओं और उदाहरणों से भरा है कि यीशु मसीह ने कैसे अपने जीवन को व्यतीत किया और मसीहियों को कैसे अपना जीवन व्यतीत करना चाहिए। धनवान व्यक्ति का दिखावा बाइबल की शिक्षाओं और उदाहरणों की पूरी तरह से उपेक्षा करता है!

(2) **मृत्यु के बाद जीवन के बारे में सिद्धान्त। *देखें*** नियमावली 5, परिशिष्ट 2

ग. परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेशों या शिक्षाओं का सारांश।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में सांसारिक सम्पत्ति के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या शिक्षाएँ क्या हैं? यीशु मसीह हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और वह हमें *क्या बनना* या *क्या करना* सिखाते है?
ध्यान दें।

(1) **सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर कैसा है।**
इन दृष्टान्तों का एक बड़ा सबक यह है कि वे सिखाते हैं कि परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को इस बात के लिए ज़िम्मेदार ठहराएँगे कि वह दुनिया में विशेष रूप से वंचित लोगों से कैसे सम्बन्ध रखता है और कैसे वह दुनिया में अपनी सांसारिक संपत्ति का उपयोग करता है। इस वर्तमान दुनिया में मृत्यु से पहले उनकी जीवनशैली के परिणाम मृत्यु के बाद अपरिवर्तनीय हैं! प्रत्येक व्यक्ति की अनन्त नियति, जो या तो स्वर्ग या नरक है, वह इस बात से निर्धारित होती है कि उन्होंने किस पर भरोसा किया और इस दुनिया में मृत्यु से पहले किसकी सेवा की (मत्ती 6:24; 25:34–46)।

(2) **मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें किसके समान बनना है।**
इन दृष्टान्तों का एक और बड़ा सबक यह है कि वे हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है और हमें क्या करना है। वे सिखाते हैं कि परमेश्वर चाहता है कि लोग अपने लिए न जीये, बल्कि अपने जीवन को परमेश्वर के अधीन होकर, खासकर जीवन के मामले में और सांसारिक संपत्ति के मामले में जीये। वह चाहता है कि लोग दूसरों की ज़रूरतों के प्रति संवेदनशील हों और दुनिया में वंचित लोगों पर दया करें।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	*(प्रतिक्रियाएँ)* **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करने के लिए*** समूह में ***बारियाँ लें।***

या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	*(सौंपा गया कार्य)* **अगले अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "मूर्ख धनवान" और "धनवान व्यक्ति और गरीब लाजर" के दृष्टान्त का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यशायाह 41,42,45 और 46** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शान्त समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। (11) रोमियों 8:1, (12) रोमियों 8:38-39, (13) रोमियों 10:9-10, (14) रोमियों 10:9-10, (15) रोमियों 10:17। पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 10:1-21।** बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शान्त समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।